हरिजन कढी हटु, वेठा सौदे सार जो,
सम रखियाऊँ साहिमी, सम रखियाऊँ वटु,
वठे को वेसाह सां, नेही निह कपटु,
परमेसरु परघटु, सुतह डिसे सामी चए.

सामीजी सच्चे संतों/भक्तों का वर्णन करते हुए कहते हैं कि हरि (परमेश्वर) के भक्त अर्थात् संतजन दुकान खोल कर बैठे हैं, जहाँ पर वे सत्य का सौदा/व्यापार कर रहे हैं। गाहक को 'सत्य-वस्तु' तौल कर देने के लिए उनके पास समता रूपी तराजू और बाट (बट्ट/तौल) हैं। संतों से वही प्रेमी मनुष्य विश्वास के साथ वस्तु/ माल लेता है, जो निष्कपट है। ऐसा मनुष्य वस्तु खरीदने के उपरांत तुरंत ही अपने सामने परमेश्वर को प्रकट रूप में पाता है।

हमारी संस्कृति उन्नत बनाने में संतों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। स्वधर्म और भक्ति-रस को महत्व देने वाले संत समाज के परम हितैषी रहे हैं संतों ने अपने सत्याचरण द्वारा समाज-हित साधने का प्रयास किया है। उन्होंने इस सत्य से अवगत कराया है कि आत्मोद्धार अथवा मुक्ति ही मनुष्य जाति का अंतिम उद्देश्य है। परोपकारी संतों को अपनी देह की अपेक्षा संसार के लोगों की, उनके आंतरिक जीवन को सुधारने-सँवारने की चिंता अधिक होती है। समर्थ रामदास जी के शब्दो में, '**चिंता करितो विश्वाची।**' जीवन सार्थक एवं सफल करने के लिए ईश्वर-नाम-स्मरण रूपी अनमोल औषधि समाज को प्रदान की है। ''**नानक, नाम जहाज है, चढै सो उतरे पार।**'' केवल प्रभु का स्मरण करने से भी भवसागर पार किया जा सकता है। ''**सच्चिदानंद धन। नाम त्याचे अधिष्ठान।**'' ''दास म्हणे नाम । जिन कैवल्याचे धाम। (ब्रह्म चैतन्य गाथा)

सामी साहब भी सच्चे संतों के परोपकार भाव का वर्णन करने के लिए एक रूपक का प्रयोग करते हैं । संतों ने परम सत्य वस्तु को बेचने के लिए (प्रचार-प्रसार करने के लिए) दुकान खोल ली है। वे आत्मज्ञान, नाम, दीक्षा देने का सौदा कर रहे हैं। इस व्यापार में समता/समानता रूपी तराजू और बाट रख लिए हैं। बिना किसी भेद-भाव के वे सब को अंतर्ज्ञान, परमेश्वर की प्राप्ति का मार्ग और मोक्ष-मुक्ति का रहस्य बतलाते हैं। वे जीव और ब्रह्म की एकता रूपी वस्तु का सौदा कर रहे हैं। यह वस्तु कोई भी खरीद सकता है। केवल एक शर्त है, प्रभु की प्राप्ति की इच्छा रखने वाला निष्कपट, प्रेमी और श्रद्धावान होना चाहिए।

■